M.A.(Education),Part-1,Paper-VI,
Presented by Dr.Pallavi,
Topic- Historical Research
Historical Research.

6.0 अनुसन्धान की विधियाँ एवं प्रक्रियाएँ - ऐतिहासिक अनुसन्धान(Research's Methods and Processes-Historical Research)

अनुसन्धान के स्वरूप का विस्तृत विवरण हम पूर्व ही दे चुके हैं। यहाँ पर सर्वप्रथम हमें विधि एवं प्रक्रिया पर विचार करना है । अनुसन्धान की विभिन्न विधियों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया गया है जिनकी चर्चा आगे की गयी है। सामान्यतः विद्यार्थी विधियों को ऐतिहासिक विधि, वर्णनात्मक विधि तथा प्रयोगात्मक विधि आदि नामों से जानते हैं। हैनरी लेस्टर स्मिथ ने तो 131 शब्दावलियों की एक सूची प्रस्तुत की है जिसे शिक्षा सम्बन्धी अनुसंधानों में विभिन्न प्रसंगों व विभिन्न रूपों में प्रयोग किया गया है। वास्तव मे इन्हें हम विधियाँ न कहकर अनुसन्धान के प्रकार कहें, तो अधिक संगत होगा। प्रत्येक अनुसन्धान एक विशेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। यदि समस्या को प्रकृति ऐतिहासिक है, तो उसे हम ऐतिहासिक अनुसन्धान कहेंगे। यदि समस्या को प्रकृति वर्णनात्मक है, तो उसे वर्णनात्मक अनुसन्धान, और यदि समस्या की प्रकृति के ऊपर निर्भर है कि अनुसन्धान कैसा होगा अथवा उसकी विधि क्या होगी? यदि उचित रूप में विचार करें तो इनमें कोई दीवार नहीं है। समुचित वैज्ञानिक निष्कर्ष के लिए तो सबसे अच्छा होगा कि अनुसन्धानकर्ता किसी समरूप के ऐतिहासिक पक्ष का विश्लेषण करे, वर्तमान का अध्ययन करे तथा आवश्यकतानुसार प्रयोग भी करके देखे। इस प्रकार की समन्वित प्रणाली ही सर्वोत्तम प्रणाली है।

अनुसन्धान की विधियों का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है। किसी ने क्षेत्र के अनुसार वर्गीकरण किया है तो किसी ने उसके उद्देश्य अथवा आँकड़े प्राप्त करने कि विधि के आधार पर वर्गीकरण किया है । सामान्य रूप से अधिकांश विद्वान निम्नलिखित वर्गीकरण को मानते हैं:

1.ऐतिहासिक अनुसन्धान-इनका सम्बन्ध भूत से है तथा यह भविष्य को समझाने के लिए भूत का विश्लेषण करता है।

2. वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण प्रकार का अनुसन्धान-इसका सम्बन्ध वर्तमान से होता है तथा इसके अन्तर्गत अनुसन्धान के विषय का स्तर निर्धारित करने का प्रयास करते हैं।

३. प्रयोगात्मक अनुसन्धान-इसका उद्देश्य वैज्ञानिक रूप में दो या दो से अधिक तत्वों के सम्बन्ध की व्याख्या करना होता है।

6.1ऐतिहासिक अनुसंधान

ऐतिहासिक अनुसंधान को ज्ञात करने से पूर्व इतिहास और ऐतिहासिक ज्ञान की प्रकृति को ज्ञात करना आवश्यक है। इतिहास के लिए अंग्रेजी में हिस्ट्री शब्द का प्रयोग होता है। इसका मूल शब्द हिस्टोरिया है। इसका अर्थ होता है-जाँच के द्वारा प्राप्त ज्ञात। अब इसका अर्थ भूतकालीन अभिलेख तक सीमित हो गया है यद्यपि भूतकाल अभिलेख पृथ्वी, नक्षत्र आदि सभी के होते हैं किन्तु यहाँ हम मानव इतिहास की ही चर्चा करते हैं।

इतिहास क्या है?-मानव की उपलब्धि का पूर्ण, सही और अर्थपूर्ण अभिलेख इतिहास कहलाता है। यह केवल कुछ घटनाओं की सूची मात्र नहीं होता अपितु एक विशेष समय एवं स्थान पर घटित मानव जीवन से सम्बन्धित

घटनओं का एक सत्प, सुनियोजित एवं परीक्षित अभिलेख होता है। इस इतिहास का प्रयोग भूतकाल की पृष्ठिभूमि में वर्तमान को समझने एवं भविष्य के लिए पूर्व कथन करने के लिए किया जाता है । जिससे भविष्य के सम्बन्ध में उचित निर्णय करने में सरलता हो सके । यह कहावत प्रचलित है कि इतिहास अपने को दुहराता है। इसका तात्पर्य यह है कि समान परिस्थितियों में त्रुटियों की पुनरावृत्ति होती है।

ऐतिहासिक सामग्री की विशेषताएं - ऐतिहासिक सामग्री की कुछ मूल विशेषताएँ हैं जो उसे अन्य प्रकार के ज्ञान से अलग करती हैं।

1. इतिहास की विषय सामग्री अपरिवर्तनीय भूतकालीन परिधि में बंधी होती हैं भूतकालीन घटनाओं को न तो प्रस्तुत कर सकते हैं न हीं उनमें परिवर्तन कर सकते हैं । यह बन्द प्रकार के आँकड़े होते हैं, जबकि विज्ञान के अन्तर्गत अनुसन्धानकर्ता ऐसी सामग्रो पर कार्य करता है जो खुली हुई है और उसे पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है ।

2. ऐतिहासिक आंकड़ों की एक विशेषता यह है कि वे भूतकालीन घटनाओं के अभिलेख के रूप में हो मिलते हैं जिनका वर्तमान अध्ययन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। वास्तव में भूतकालीन अवशेषों के आधार पर उन घटनाओं को सजीव रूप में चित्रित करने का प्रयास किया जाता है।

3. ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण में व्यक्तिगत पक्षपात के लिए बहुत स्थान होता है। अतः ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता को ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण में बहुत ही सतर्क रहना पड़ता है। वह घटना का प्रत्यक्ष दर्शक नहीं है। निरीक्षण करने और रिपोर्ट देने
वाला कोई और था। अत: वस्तुनिष्ठता लाने में कठिनाई होती है।

4. विज्ञान में वर्तमान के आधार पर भविष्य के विषय में पूर्व कथन करते हैं किन्तु इतिहास में वर्तमान के आधार पर भूत का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं।

इन विशेषताओं के कारण ऐतिहासिक अनुसन्धान अन्य अनुसन्धानों से भिन्न होता है और इन्हें ध्यान में रखकर कार्य करने वाला ही सफल होता है ।

वास्तव में ऐतिहासिक अनुसन्धान को उचित रूप में पूर्ण करना अत्यन्त कठिन है क्योंकि सही आंकड़े प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई होती है ।

6.2 ऐतिहासिक अनुसन्धान क्या है?

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार, ऐतिहासिक अनुसन्धान का सम्बन्ध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है। इसके विभिन्न पद भूत के सम्बन्ध में एक नयी सूझ पैदा करते है जिसका सम्बन्ध वर्तमान और भविष्य से होता है।

एफ. एल. व्हिटनी के अनुसार, "ऐतिहासिक अनुसन्धान भूत का विश्लेषण करता है। इसका उद्देश्य भूतकालीन घटनाक्रम, तथ्य और अभिवृत्तियों का आधार पर ऐसी सामाजिक समस्याओं का चिन्तन एवं विश्लेषण करना है जिनका समाधान नहीं मिल सका है। यह मानव-विचारों और क्रियाओं के विकास की दिशा की खोज करता है जिसके द्वारा सामाजिक क्रियाओं के लिए आधार प्राप्त हो सके।"

6.3 ऐतिहासिक अनुसंधान की समस्याएँ (Problems of Historical Research)

ऐतिहासिक अनुसंधान को निम्नलिखित समस्याएँ अत्यधिक कठिन बना देती हैं :

1. उपरोक्त समस्या का चयन एक कठिन समस्या है। समस्या ऐसी होनी चाहिए जिसका समुचित अध्ययन एवं विश्लेषण संभव हो । अधिकतर प्रारम्भिक अनुसन्धानकर्ता बड़ी विस्तृत समस्या ले लेते हैं, जिसका निर्वाह कठिन हो जाता है। अतः समुचित सीमांकन आवश्यक है। विद्वानों का विचार है कि अनुसंधान में किसी व्यापक समस्या के सर्वेक्षण मात्र उत्तम होगा, यदि संक्षिप्त समस्या का गहन अध्ययन किया जाए ।

2. उपयुक्त परिकल्पना के निर्माण में भी कठिनाई आती है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इससे दिशा निर्देश मिलता है। उपयुक्त परिकल्पना के अभाव में ऐतिहासिक आंकड़ों को प्राप्ति निरूद्देश्य संग्रह मात्र हो जाती है, जिसके आधार पर वर्तमान का समुचित विशलेषण और भविष्य के लिए पूर्व कथन कठिन हो जाता है ।

3. आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण भी अनेक कठिनाइयाँ प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता उस काल की घटनाओं का प्रत्यक्ष दर्शक तो नहीं होता, उसे प्राप्त सामग्री पर विश्वास करना पड़ता है तथा अपनी सूझ-बूझ से निष्कर्ष निकालना पड़ता है। अतः
विश्वसनीय आंकड़ों की प्राप्ति के साथ ही साथ उनका समुचित विश्लेषण भी कठिन होता है। इसके लिए अनुसन्धानकर्ता में उच्च कोटि की कल्पना, बुद्धिमत्ता तथा सूझ आवश्यक है।

4. ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करते समय बात उस काल को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति एवं व्यवस्था का समुचित ध्यान नहीं रखते जो किसी भी क्षेत्र में व्यकियों के चिन्तन तथा व्यवहार को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित करती है। अत: इनके सन्दर्भ में हो विचार संगत होगा।

6.4 ऐतिहासिक अनुसन्धान के मूल उद्देश्य

याँ तो ऐतिहासिक अनुसन्धान के उतने उद्देश्य होंगे जितने अनुसन्धान कर्ता, किन्तु मूल रूप में इसके निम्नलिखित उदेश्य हो सकतें है:

1. ऐतिहासिक अनुसन्धान का मूल उद्देश्य भूत के आधार पर वर्तमान को समझना एवं भविष्य के लिए सतर्क होना है। अधिकांश वस्तुओं का कोई न कोई ऐतिहासिक आधार होता है। अत: किसी समस्या, घटना अथवा व्यवहार से समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है। अनुशासन सम्बन्धी वर्तमान धारणा, शिक्षक के स्थान पर छात्र को महत्व, छात्र-परिषदो का गठन एवं उन पर नियन्त्रण, व्यक्ति की वर्तमान अवधारणा, मापन और मूल्यांकन आदि सभी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विकसित हुए हैं और आज वर्तमान रूप में हैं। अतः ऐतिहासिक अनुसन्धान का मूल्य उद्देश्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में इन समस्याओं का मूल्यांकन करना है।

2. ऐतिहासिक अनुसन्धान का दूसरा प्रमुख उद्देश्य शिक्षा मनोविज्ञान अथवा अन्य सामाजिक विज्ञानों में चिन्तन को नयी दिशा देने एवं नीति निर्धारण में सहायता करना है। यह भी स्पष्ट करता है कि आज नवीन कही जाने वाली वस्तुओं में नवीनता कहाँ तक है ? तथा बीच के परिवरतनों के क्या प्रभाव पड़े हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक अनुसन्धान त्रुटियों के प्रति सतर्क कर मार्ग प्रशस्त करता है।

3. ऐतिहासिक अनुसन्धान का तीसरा उद्देश्य वैज्ञानिकों की भूतकालीन तथ्यों के प्रति जिज्ञारा की तृति एवं भूत, वर्तमान तथा भविष्य का सम्बन्ध स्थापन है।

4. ऐतिहासिक अनुसंधान का एक उद्देश्य किसी क्षेत्र विशेष के व्यावसायिक कार्यकर्ताओं के लिए पूर्व अनुभव के आधार पर भावों कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायता करना है।

5. यह इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि किन परिस्थितियों में, किन कारणों से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों ने एक विशेष प्रकार का व्यवहार किया है, उसका प्रभाव उसके ऊपर तथा समाज पर क्या पड़ा है।

6. ऐतिहासिक अनुसंधान इस तथ्य का भी विश्लेषण करता है कि आज जो सिद्धान्त तथा क्रियाएँ व्यवहार में हैं, उसका उद्भव एवं विकास किन परिस्थितियों में हुआ है।

6.5 ऐतिहासिक अनुसन्धान का महत्त्व

1. इतिहास तत्कालीन घटनाओं के परिणामों को स्पष्ट करते हुए उसके गुण दोषों से परिचित कराता है। ऐतिहासिक अनुसन्धान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में स्थित वर्तमान क्रियाओं और प्रवृत्तियों के आधार का सम्यक विवेचन करता है। इससे किसी उलझी समस्या का हल करने में सहायता मिलती है । अत: ऐतिहासिक अनुसन्धान वर्तमान शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का हल ढुँदने में सहायक होता है।

2. ऐतिहासिक अनुसन्धान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में सिद्धांत एवं क्रिया पक्ष की आलोचनात्मक व्याख्या करता हुआ उनके वर्तमान स्वरूप को ऐतिहासिक एवं विकासात्मक स्थिति को स्पष्ट करता है।

3. ऐतिहासिक अनुसन्धान भूतकालीन त्रुटियों से परिचित कराकर भविष्य के प्रति सतर्क करता है।

4. शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक अनुसन्धान समाज एवं विद्यालय के सम्बन्धों की व्याख्या करता है तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में इसके
कारणों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

5. ऐतिहासिक अनुसन्धान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के लिए वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है।

6. यह शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों तथा शोध कार्य में लगे अन्य व्यक्तियों के प्रति सम्मान प्रकट करता है।

7. ऐतिहासिक अनुसन्धान अंधविश्वास एवं धर्मों का निवारण करता है।

6.6 ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता के गुण

ऐतिहासिक अनुसन्धान का कार्य अत्यन्त कठिन है । अत: वही व्यक्ति इसमें सफल हो सकता है जिसमें निम्नलिखित गुण हा-
1.सांस्कृतिक रुचि, 2. विश्व बन्धुत्व को भावना, 3. विशिष्ट क्षेत्र का गहन ज्ञान, 4. निष्पक्षता एवं मानसिक असन्तुलन, 5 स्वच्छ मस्तिष्क व क्रमिक अध्ययन में रुचि तथा 6, विषय से परिचय क्षमता।

6.7 ऐतिहासिक अनुसंधानकर्ताके गुण

ऐतिहासिक अनुसंधान की विषयवस्तु चुनने में निम्नलिखित दो तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है: 1. ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करना जिसका पता न लगा हो, तथा 2. पुराने अनुसंधान का संशोधन ।
अच्छे प्रकरण प्राप्त करने के उपाय-1.विषय विशेष का गहन अध्ययन ।

2. सन्देहात्मक बुद्धि से साहित्य सर्वेक्षण।

3. अन्वेषणात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण।

उपर्युक्त दृष्टिकोण से अध्ययन करने में सरलता होती है ।
ऐतिहासिक अनुसन्धान के निम्नलिखित पद
होते हैं :

1. आंकड़ों संग्रह, 2. आंकड़ों का विश्लेषण तथा 3. उपर्युक्त के आधार पर तथ्यों के विश्लेषण एवं रिपोर्ट
डेविड फॉक्स ने ऐतिहासिक अनुसन्धान के निम्नलिखित पद बताये हैं :

1. यह निश्चय करना कि समस्या का समाधान ऐतिहासिक विधि से होगा।

2. किस प्रकार के आंकड़ों की आवश्यकता है, इसका निश्चय करना।

३. पर्याप्त आंकड़े प्राप्त हों, इसका निश्चय करना।

4. निम्नलिखित माध्यमों से आंकड़े प्राप्त करके प्रारम्भ करना ।

अ. जाति आंकड़े, ब. ज्ञात स्त्रोतों से नवीन आंकड़े प्राप्त करना-1. प्राथमिक स्त्रोत, 2. माध्यमिक स्त्रोत, स. नवीन और पूर्व अज्ञात
आंकड़ों की खोज-1, आंकड़ों के रूप में 2, स्त्रोत के रूप में।

5. प्रतिवेदन लिखना प्रारम्भ करना।

6. आँकड़ों का परीक्षण करते जाना।

7. अनुसन्धान प्रतिवेदन का वर्णनात्मक भाग पूर्ण करना।

8. अनुसन्धान प्रतिवेदन का विश्लेषणात्मक भाग पूर्ण करना।

9, आंकड़ों का वर्तमान के प्रयोग और भविष्य के लिए परिकल्पना का निर्माण करना।

6.8 ऐतिहासिक अनुसंधान में आंकड़ों की प्राप्ति के साधन

जिज्ञासा अनुसन्धानकर्ता के लिए ऐतिहासिक साधन यह विचित्र विश्व ही है । सत्य की खोज के लिए उसे इसी विश्व में भ्रमण करना पड़ता है। यह विचित्र विश्व गुप्त रहस्यों तथा आच्छन्न तथ्यों से परिपूर्ण है। इन रहस्यों का उदघाटन तथा तत्वों का विश्लेषण अन्वेषण इतिहासकार का मुख्य लक्ष्य होता है। ऐतिहासिक साधनों का विभाजन निम्नवत है।

1. प्राथमिक साधन-ये साधन हैं जो घटना, व्यक्ति या संस्था के विपय में प्रथम साक्षी का कार्य करते हैं। इस प्रकार के साधन घटना से तात्कालिक सम्बन्ध रखने वाले होते हैं, जिनके समक्ष वास्तव में घटना घटित होती है। इस प्रकार के साधनों में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण हैं :

1. सचेतन रूप से प्रदर्शित सूचनाएँ-अ. लिखित साधन-जैसे, वृतान्त, कथा, जीवन वृतान्त दैनन्दिनी, वंशावलियों तथा शिलालेख आदि।

ब. मौखिक परम्परा-जैसे, ऐतिहासिक चित्र, मूर्तियाँ, सिक्के आदि।

2.अवशेष तथा अचेतन प्रमाण-पत्र-यथा , मानवीय अवशेष, भवन, अस्व-शस्त्र, वस्त्र एवं ललित कलाएँ आदि।

इन अवशेषों से तत्कालीन घटना, काल विशेष या व्यक्ति विशेष के विषय में प्राथमिक ज्ञान प्राप्त होता है।

2. द्वितीयक साधन-ऐतिहासिक घटना या व्यक्ति के विषय में जो कुछ तथ्य प्रदान करते हैं, उनकी आवृत्ति उन साधनों के अन्तर्गत प्रत्यक्षतः समाहित नहीं रहती । एक व्यक्ति जो ऐतिहासिक तथ्य के विषय में तात्कालिक घटना से सम्बन्धित व्यक्ति के मुंह से सुने सुनाये वर्णन को अपने शब्दों में व्यक्त करता है, ऐसे वर्णन को द्वितीयक साधन कहते हैं। इनमें यद्यपि सत्य का अंश रहता है किन्तु प्रथम साक्षी से द्वितीय श्रोता तक पहुंचते-पहुंचते वास्तविकता में कुछ परिवर्तन आ जाता है जिससे उसके दोष युक्त होने की सम्भावना रहती है।

6.9 शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक इतिहास के साधन

घटना को रिपोट-इसके अन्तर्गत लिखित प्रमाण-पत्र तथा ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं को लिया गया है। उदाहरणार्थ, विद्यालय का वातावरण, विद्यालय भवन एवं सज्जा, छात्रों के सामूहिक चित्र, शैक्षिक क्रिया अथवा मनोवैज्ञानिक प्रयोग में लगे अध्यापकों , मनोवैज्ञानिकों, छात्रो आदि के चित्र, डिप्लोमा, उपस्थिति रजिस्टर, प्रमाण-पत्र के नमूने, बैंक अभिलेख, पाठ्य पुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएं मानचित्र डिजाइन आदि। एच. जी. गुड के अनुसार, "किसी घटना विशेष का उल्लेख जब तक नहीं किया जाता, उन्हें अवशेष कहते हैं।" उदाहरणार्थ साधारण प्रमाण-पत्र अथवा उपस्थिति रजिस्टर का नमूना अवशेष है, परन्तु यदि उस पर किसी छात्र का पूर्ण विवरय लिख दिया जाये तो वह लिखित प्रमाण-पत्र हो जाता है कुछ प्रमाण-पत्र निम्नलिखित है-क. वैधानिक एक्ट-जैसे संविधान, कानून चार्टर, आदि।ख. अदालती फैसले, ग, कार्यकारिणी या अन्य कार्यालय सम्बन्धी लेखे, घ. समाचार पत्र पत्रिकाएँ, ङ निजी सामग्री, च. साहित्यिक सामग्री आदि।

6.10 ऐतिहासिक आंकड़ों के साधनों का संग्रह एवं प्रयोग

आंकड़ों का संग्रह करने के बाद विशेषज्ञों द्वारा प्रयोग हेतु परामर्श लेना चाहिए। इसके लिए एक तालिका बनानी होगी। संकलित आंकड़ों के विभिन्न प्रकरणों में विभाजित कर उनका वर्गीकरण कर लेंगे, जैसे नालन्दा विश्वविद्यालय के अनुसन्धान के लिए शिक्षा किम स्थान पर दी जाती थी, कार्यालय कहाँ पर था, पाठ्यक्रम क्या था, पाठ्य पुस्तकें कैसी थीं, परीक्षा प्रणाली क्या थी? आदि को योजना बनानी होगी और इसके अनुकूल प्रमाणित संसाधनों को सुव्यवस्थित करना होगा।

आंकड़ों की आलोचना का मूल्यांकन-आंकड़ों के संग्रह के साथ-साथ उसका मूल्यांकन भी करना होता है कि किसे तथ्य माना जाय, किसे सम्भावित माना जाये और किस आंकड़े का भ्रमपूर्ण माना जाय? इसके लिए दो तथ्यों को ध्यान में रखते हैं :

1. आन्तरिक क्रमबद्धता-जिन आंकड़ों में आन्तरिक क्रमबद्धता नहीं होगी अर्थात् विरोधाभास का अभाव हो, वे सत्य के अधिक
निकट होंगे।

2. वाक्य क्रमबद्धता-इसका तात्पर्य यह है कि अन्य साधनों से प्राप्त सूचनाओं से इसका विरोध न हो।

तथ्य पूर्ण कैसे करें?-1. यदि दो प्राथमिक स्त्रोत एक ही तथ्य पर सहमत हों। 2. एक प्राथमिक स्त्रोत तथा एक माध्यमिक स्त्रोत मत हो। 3. उस तथ्य का विरोधी किसी ने न किया हो।

उपर्युक्त तीनों विशेषताओं के आधार पर किसी आँकड़े को तथ्यपूर्ण मान लेते हैं, उसके पश्चात् ही उसको समालोचना करते हैं।

1. बाहा आलोचना-इसमें इस तथ्य की जाँच करते हैं कि प्राप्त आँकड़ों या प्रमाण-पत्र अपने बाह्य स्वरूप को दृष्टि से उचित है अथवा नहीं इसके अन्तर्गत लिखित प्रमाण-पत्र की यथार्थता की जाँच की जाती है। बाह्य आलोचना के अन्तर्गत आंकड़ों के रूप समय, स्थान तथा परिणाम की दृष्टि से यथार्थता की जांच करते हैं । यह देखते हैं कि प्राप्त आँकड़ों जब लिखा गया, जिस स्याही से गया, लिखने में जिस शैली का प्रयोग यिा गया तथा जिस प्रकार की भाषा, लिपि, रचना, हस्ताक्षर, आदि प्रयुक्त हैं, ये सभी तथ्य मौलिक घटना के समय उपस्थित थे या नहीं । यदि नहीं तो आँकड़ा जाली हैं। इसके परीक्षण हेतु निम्न तथ्यों पर ध्यान देते हैं :

1. लेखक कौन था तथा उसका चरित्र और व्यक्तित्व कैसा था?

2. सामान्य रिपोर्टर के रूप में उसकी योग्यताएँ क्या थी?

3. इस तथ्य के रिपोर्टर के रूप में उसकी विशिष्ट योग्यता क्या थी-अ. सम्बन्धित घटना में रुचि कैसी थी? ब. धटना का निरिक्षण उसने किस स्थिति में किस मन स्थिति से किया था? स. घटना की रिपोर्ट और उसके अध्ययन के लिए उसे क्या आवश्यक सामान्य और प्राविधिक ज्ञान उपलब्ध था?

5. प्रमाण-पत्र किस प्रकार लिखा गया-स्मरण द्वारा, परामर्श द्वारा, देखकर या पूर् डाफ्टों को मिलाकर ?

6.लिखित प्रमाण-पत्र अन्य प्रमाण-पत्रों से कहाँ तक मिलता है?

आंकड़ों को यथार्थता का ज्ञान करने हेतु इतिहासकारों ने अलग-अलग विज्ञानों का अपने क्षेत्र में प्रयोग किया है । उदाहरणार्थ, शिलालेखों का अध्ययन करने के लिए इपिग्राफी, डिप्लोमा आदि का ज्ञान करने हेतु डिप्लोमेटिक्स, लिखावट का ज्ञान करने पैलियोग्राफी, तारीखों का ज्ञान करने हेतु फिलोलॉजी, स्याही हेतु केमिस्ट्री, आदि के प्रयोग द्वारा आँकड़े के बाह्य स्वरूप के विषय में पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करने में सफलता मिलती है ।

2.आन्तरिक आलोचना-इस प्रकार की आलोचना का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि क्या लेखक विषय के साथ न्याय कर पाया है अथवा नहीं इसमें निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देते हैं।

क. लेखक किसी रूप में प्रभावित तो नहीं था?

ख. क्या तथ्य की जानकारी हेतु लेखक को पर्याप्त अवसर मिला था?

ग. क्या वर्णित घटना उसने देखी थी?

घ. क्या विश्वसनीय निरीक्षण हेतु वह सक्षम था?

ङ.क्या लेखक का कोई विशेष उद्देश्य था?

च, क्या लेख किसी दबाव अथवा भय में था?

छ, घटना के कितने दिन पश्चात् उसने लिखा है?

ज. उसके लेख तथा अन्य लेखों में कितनी समानता है?

झ. लेखक की राष्ट्रीयता, पेशा, स्थिति, वर्ग, दलों से सम्बन्ध, धर्म, प्रशिक्षण आदि के विषय में क्या ज्ञात है?

अ. अभिलेखों के तैयार करने के लिए उसमें प्रशिक्षण, मानसिक क्षमता, सामाजिक सार, अवधारणाएँ, रुचियाँ, भाषायी आदत आदि
कैसी थी?

ट. लेखक सही है अथवा गलत?

ठ. अभिलेख में कोई धोखा तो नहीं किया गया है?

ड. लेखक ने अभिलेख क्यों तैयार किया?

ढ. क्या लेखक ऐसी स्थिति में तो नहीं रख दिया गया था जिसमें उसे सत्य को छिपाना पडा हो ?

ण. क्या उसने अधिकारियों को प्रसन्न कर उन्नति चाही थी?

त. क्या उसमें धार्मिक, राजनीतिक अथवा जातीय पूर्व धारणा प्रबल थी?

थ. क्या जनता को प्रसन्न करने हेतु उसने संवेग उभारा है?

द. क्या उसने साहित्यिक प्रवाह में सत्य को छिपाया है?

इन प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर ऐतिहासिक आंकड़ों की आन्तरिक समालोचना करने के पश्चात ही अनुसंधान कर्ता किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है।

6.11 धनात्मक तथा ऋणात्मक ऐतिहासिक समालोचना

आन्तरिक समालोचना को उस समय धनात्मक कहते हैं, जब अनुसंधान कर्ता का प्रयत्न अभिलेख का सत्य, वास्तविक और अक्षरशः अर्थ ज्ञात करने का होता है ।आन्तरिक समालोचना को उस समय ऋणात्मक कहते हैं, जब अनुसंधान कर्ता का प्रत्येक प्रयत्न अभिलेख की अविश्वसनीय को ज्ञात करना रहता है ।

शिक्षा तथा मनोविज्ञान में ऐतिहासिक अनुसन्धान की प्रक्रिया

ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता को निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाने में सरलता होगी :

1. ऐसे क्षेत्र का चुनाव करना जिसमें पर्याप्त प्रमाण एवं अनुसन्धान सामग्री प्राप्य हो।

2. जहाँ तक सम्भव हो, प्राथमिक साधन ही प्रयोग करें।

3. आवश्यकतानुसार सामान्य रूप से माध्यमिक साधनों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

4. सुपरिभाषित समस्या पर कार्य प्रारम्भ करें।

5. व्यक्तिगत पक्षपातों से सदैव बचते रहें।

6.विभिन्न परिस्थितियों एवं वातावरण की स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन को आगे बढ़ायें।

7. कार्य कारण सम्बन्ध पर विशेष ध्यान दें।

8. विभिन्न आंकड़ों के आधार पर अर्थपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त करें ।

निम्नलिखित तथ्यों से बचने का प्रयास करें :

1. आंकड़ों को अत्यन्त सरल बनाने का दुष्प्रयास न करें।

2. स्वल्प सामग्री के आधार पर ही सामान्यीकरण न करें।

3. विशिष्ट और सामान्य तथ्यों को एक दृष्टि से न देंखे।

4. बहुत व्यापक समस्या न ले लें जो पूरा ही न हो।

5. माध्यमिक आंकड़ों पर ही विश्वास न कर लें।

6. अनेक व्यक्तियों द्वारा प्रदत्त तथ्यों को उचित मानने से न चूके ।

7. व्यक्तिगत पक्षपात से बचने का प्रयास करें।

8. वर्णन नीरस न हो।

9. शब्दों के पूर्व निश्चित अर्थ को छोड़कर नये अर्थ में उसे न लें ।अर्थ परिवर्तित होते रहते हैं।

6.12 ऐतिहासिक अनुसन्धान का क्षेत्र

वैसे तो ऐतिहासिक अनुसन्धान का क्षेत्र उतना ही व्यापक है, जितना स्वयं जीवन, किन्तु संक्षेप में इसके क्षेत्र में निम्नलिखित को सम्मिलित कर सकते हैं:

1.बड़े शिक्षाशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के विचार ।

2. संस्थाओं एवं प्रयोगशालाओं द्वारा किये गये कार्य

3. विभिन्न कालों में शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक विचारों के विकास की स्थिति।

4. एक विशेष प्रकार के विचारधारा का प्रभाव और उसके स्त्रोत।

5.शिक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था।

6. पुस्तक सूची की तैयारी आदि।

6.13 ऐतिहासिक शोध प्रबन्ध के मूल्यांकन के आधार

1. समस्या अनुसन्धान के योग्य हो।

2. निश्चित लेखक, स्थान और समय के अनुसार स्त्रोत का वर्गीकरण हो।

3. अध्ययन परिसीमित हो।

4. शोध प्रबन्ध की व्यवस्था तार्किक आधार पर हो ।

5. तथ्यों की समुचित व्याख्या की गयी हो।

6. स्त्रोत पर्याप्त रूप में हों तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक, दोनों प्रकार के साधन प्रयोग में आये हों।

7. साधन उचित और विश्वसनीय हों।

8. शोध प्रबन्ध भाभी अनुसन्धान के लिए सुझाव प्रस्तुत करें।

9. अध्ययन में समय एवं धन का ध्यान रखा गया हो।

10. कम से कम दो स्वतन्त्र पक्षियों द्वारा तथ्यों की जाँच कर ली गयी हो।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर किसी ऐतिहासिक शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन किया जा सकता है।